ऐस्केप किंग
हैरी हुडिनि
की कहानी
जॉन अर्नेस्ट
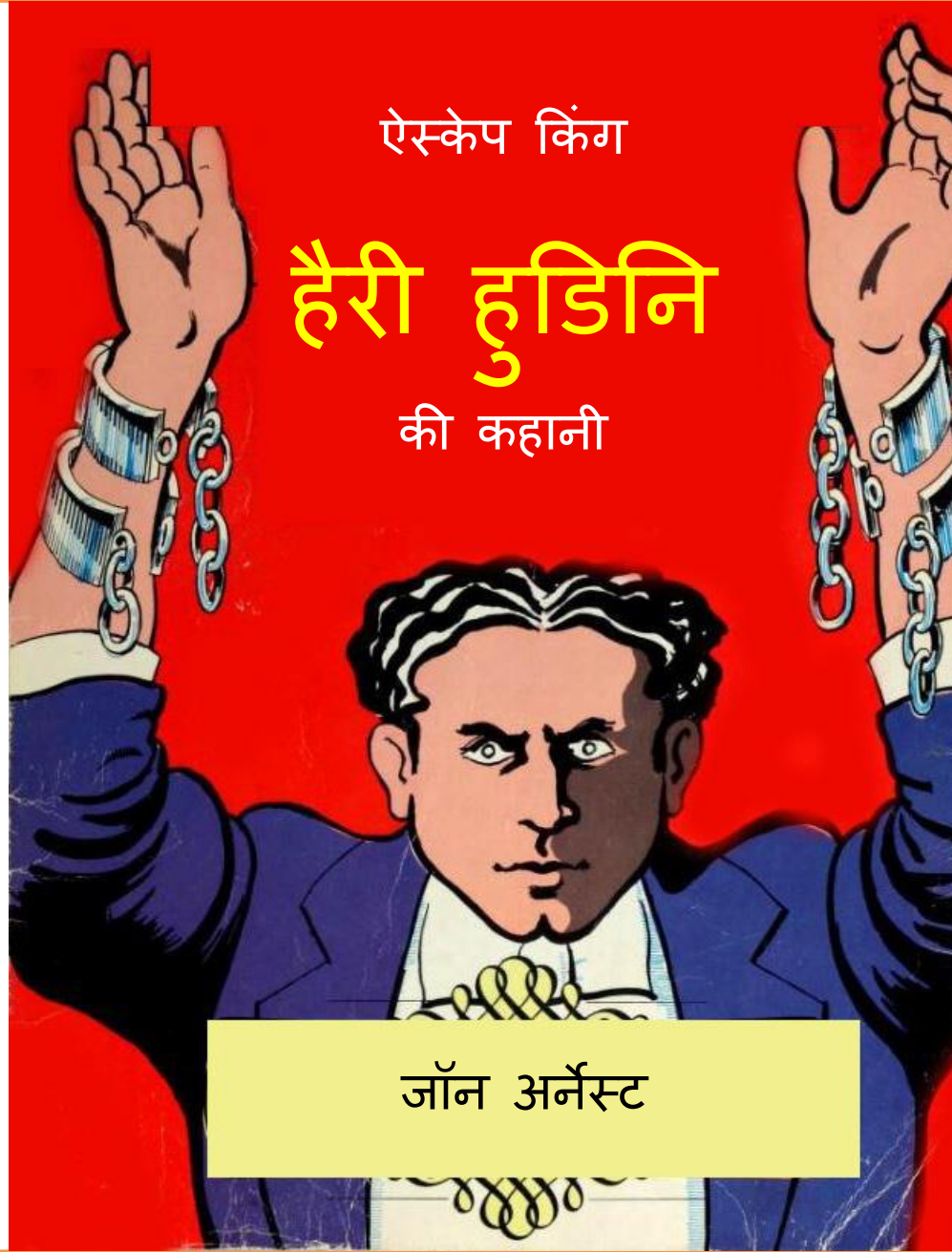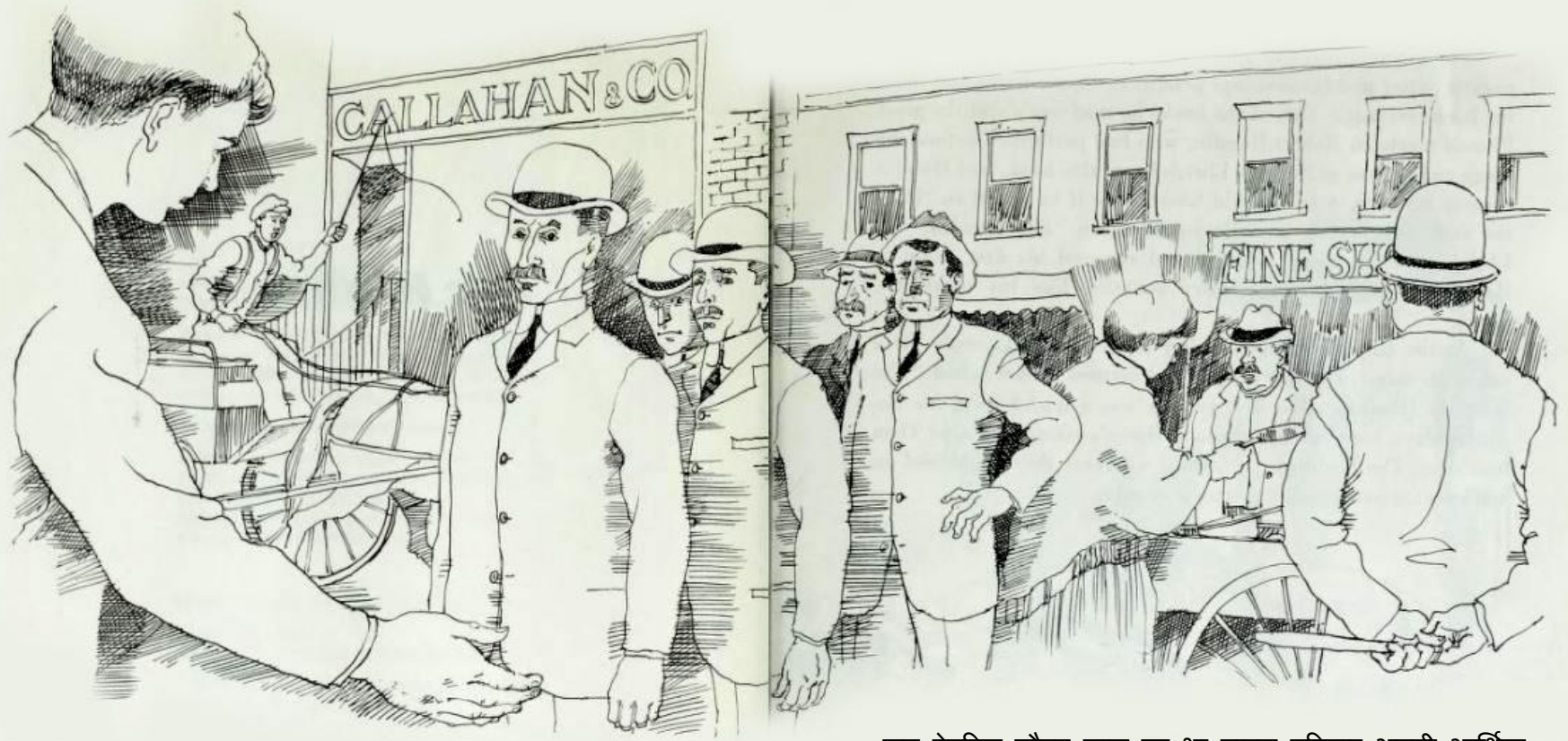
ऐहरिच वाइस का जन्म 24 मार्च 1874 के दिन बुडापैस्ट हंगरी में हुआ था. उसी वर्ष उसके पिता ने एक विवाद के पश्चात एक व्यक्ति को द्वंद्व युद्ध में मार डाला. इस कारण अपनी पत्नी और चार बच्चों के साथ उसके पिता को ऐप्पलटन, विसकौंसिन भाग जाना पड़ा. परिवार के पास पैसों की कमी थी. जब ऐहरिच के पिता को रेबाइ का पद खोना पड़ा तो वाइस परिवार दरिद्रता के कगार पर पहुँच गया. ऐहरिच अभी छोटा ही था पर घर खर्च के बिल अदा करने के लिए वह जूते पॉलिश करता, घरों में अखबार बांटता. लेकिन जैसे-जैसे परिवार में और बच्चों का जन्म होता रहा, घर खर्च बढ़ता ही गया.

जब ऐहरिच चौदह साल का था वाइस परिवार अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के विचार से न्यू यॉर्क आ गया. एक दिन ऐहरिच, जो अब बेरोज़गार था, ने कुछ लोगों को कतार में खड़े देखा. यह सब 'सहायक नैक्टाइ कट्टर' की नौकरी के लिये प्रतीक्षा कर रहे थे. ऐहरिच को लगा कि अगर वह कतार के अंत में खड़ा हुआ तो कतार में उसके आगे खड़े किसी व्यक्ति को यह नौकरी अवश्य मिल जायेगी. बड़े विश्वासपूर्वक और शांत भाव से उसने घोषणा कर दी कि नौकरी किसी को दे दी गई थी. कतार में खड़े लोग निराश होकर लौट गए. फिर वह कार्यालय के भीतर गया और वह नौकरी उसने पा ली. यह एक कुत्सित चाल थी लेकिन ऐहरिच को अपने परिवार के लिए पैसों की बहुत ज़रुरत थी.

अगले ढाई वर्षों तक ऐहरिच ने अपने दिन नैक्टाइ बनाने में बिताए और शाम के समय वह जादू पर किताबें पढ़ता और बाज़ीगरी और करतबों का अभ्यास करता. एक किताब जो उसने पढ़ी वह फ्रांस के प्रसिद्ध जादूगर रोबर्ट ऊदाँ (Robert Houdin) के विषय में थी. उस जादूगर ने यूरोप के राजाओं और रानियों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन किया था. ऐहरिच को यह किताब बहुत अच्छी लगी और ऊदाँ को वह अपना हीरो मानने लगो. एक मित्र ने सुझाव दिया कि अगर ऐहरिच 'Houdin' के नाम के अंत में 'I' लगा दे तो 'Houdin' का नाम का अर्थ हो जाएगा 'Houdin' जैसा. यह बात सुन कर ऐहरिच ने अपना नाम रख लिया हुडिनि (Houdini). उसने अपना पहला नाम ऐहरिच बदल कर हैरी कर लिया क्योंकि हैरी उसके उपनाम ऐही जैसा ही था.

सत्रह वर्ष का होने पर हैरी को लगा कि वह जादूगर के रूप में काम करने के लिए तैयार हो गया था. उसने अपनी नौकरी छोड़ दी. उसने अपने करतब का एक शो बनाया जिसका नाम रखा, हुडिनि बंधु (The Brothers Houdini). आरंभ में उसका साथी उसका एक मित्र था लेकिन कुछ माह बाद उसका छोटा भाई थियो उसके साथ हो गया. जहाँ भी भाइयों को दर्शक मिलते वहीं वह अपना प्रदर्शन करते: पार्टियों में, कल्बों में या कॉफी हाउसों में.
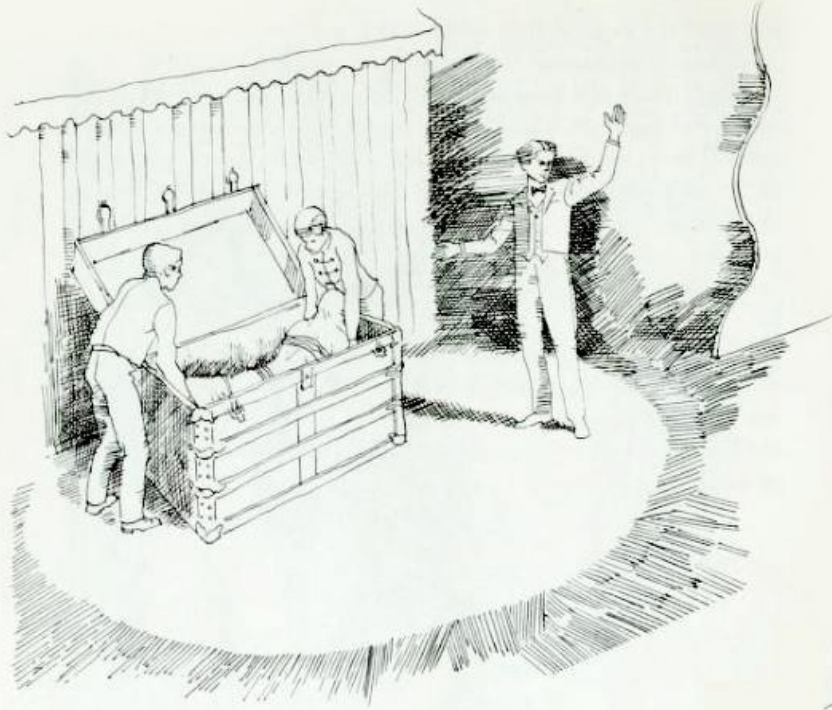
फिर उन्हें एक बड़ा अवसर मिला. एक दिन इमपिरियल म्यूज़िक हॉल में आयोजित एक प्रोग्राम के लिए पहले प्रदर्शन के कलाकार नहीं आए. हुडिनि भाइयों को उन लोगों की जगह अपने करतब दिखाने का अवसर दिया गया.

उस रात दोनों भाई व्यग्र थे. अंतिम करतब तक सब कुछ सही हुआ. अंतिम करतब का नाम था, बोरी और बक्सा (Sack and Trunk). इस करतब में थियो के हाथ उसकी पीठ पीछे बाँध कर उसे एक बोरे में बंद कर दिया जाता था. फिर उस बोरे को लकड़ी के एक बड़े बक्से में रख दिया जाता था. हैरी बक्से को ताला लगा कर रस्सी से बाँध देता था और उसके चारों ओर एक पर्दा कर देता था. फिर वह दर्शकों से कहता था, “जब मैं तीन बार ताली बजाऊँगा तब आपको एक चमत्कार दिखाई देगा.”

जब यह करतब सही ढंग से किया जाता तब हैरी परदे के पीछे चला जाता था और झटपट भाई की जगह बक्से में छिप जाता था. दर्शकों को तीन तालियों की आवाज़ सुनाई देती थी और थियो परदे से बाहर जाता था. बक्से के अंदर रस्सी से बँधा हैरी होता, उसके हाथों पर ताला लगा होता. लेकिन उस रात तालियाँ न बजीं. एक लंबे और अपमानजनक अंतराल के बाद स्टेज के परदे गिरा दिए गए. थियो वह औज़ार लाना भूल गया था जिससे बक्सा खोला जाता था.

इस असफलता के बाद हुडिनि भाइयों को न्यू यॉर्क में काम मिलना कठिन हो गया. इसलिए वह वहाँ से मिडवैस्ट चले गए. वहाँ वह उन जगहों में अपने करतब दिखाने लगे जहाँ टिकट बहुत सस्ती थी और जिन्हें डाइम म्यूज़ियम कहा जाता था. कभी-कभी वह दिन में बीस शो तक करते थे.

1894 में वह न्यू यॉर्क लौट आए थे. लेकिन वह अभी भी डाइम म्यूज़ियम में अपने करतब दिखा रहे थे. उसी वर्ष वसंत में हैरी की मुलाकात ब्रुकलिन की एक दुबली-पतली काले बालों वाली लड़की से हुई जो 'द फ्लॉर्ल सिसटर्स' के नृत्य और गीत प्रदर्शन में भाग लेती थी. लड़की का नाम भारी-भरकम था-विलहैल्मिना बिएटरेस रेहनर. लेकिन हैरी ने इस नाम को छोटा कर के बैस बना दिया. इस भेंट के दो सप्ताह बाद उन्होंने विवाह कर लिया. अब बैस ने थियो की जगह ले ली. इसकी फुर्ती और उसका छोटा आकार 'बोरी और बक्से' वाले करतब में बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ.

बैस के साथ प्रदर्शन करते हुए हैरी ने एक नया करतब सीखा-हथकड़ी खोलना. हैरी ने पाया कि एक हथकड़ी को खोलना उतना कठिन न था जितना आम लोग समझते थे. एक ही चाभी कई प्रकार की हथकड़ियाँ खोल सकती थी. धातु का एक गोल घुमाया हुआ टुकड़ा जिसे पिक कहा जाता था, किसी भी हथकड़ी को खोलने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता था. प्रचंड उत्साह के साथ वह हथकड़ियाँ खोलने का तरीका सीखने लगा. उसने तालों के विषय में किताबें पढ़ीं. ताले बनाने वालों से जानकारी प्राप्त की. तालों के अनोखे और पुराने मॉडलों की उसने जाँच की और घंटों तक ताले खोलने का अभ्यास किया.
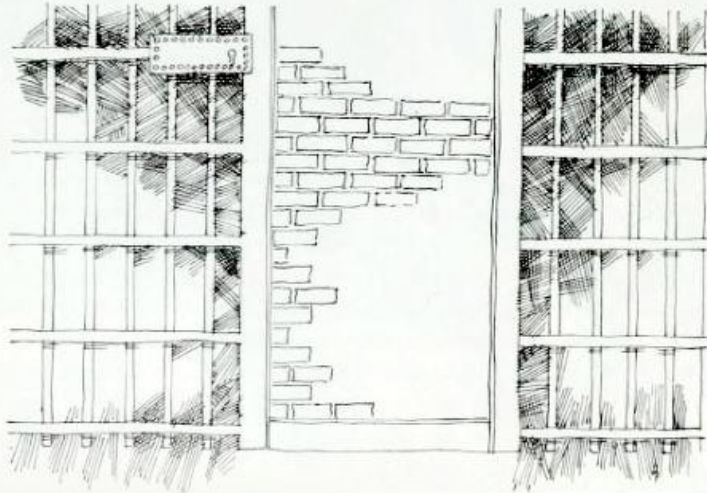
आखिरकार उसे अपनी कला को परखने का एक अवसर मिला. सैन फ्रैंसिस्को में उसने स्थानीय पुलिस को चुनौती दी कि वह अपनी कोई भी हथकड़ी लगाकर उसे कैद कर लें. जाँच के दिन हैरी ने अपने सब कपड़े उतार दिए और तब एक डॉक्टर ने उसकी तलाशी ली कि कहीं उसने कोई चाभी या पिक छिपा कर न लाई हो. फिर हैरी के हाथ-पाँव बाँध दिए गए. दस हथकड़ियों की एक चेन बना कर उसके हाथों और टखनों को बाँध दिया गया. फिर पुलिस ने उसे एक अलमारी में बंद कर दिया. कोई तरीका दिखाई न दे रहा था कि हैरी अपने को इस कैद से छुड़ा पाएगा. दस मिनट बाद हैरी अलमारी का दरवाज़ा खोल की बाहर आ गया. हैरी कैद से छूट गया था.
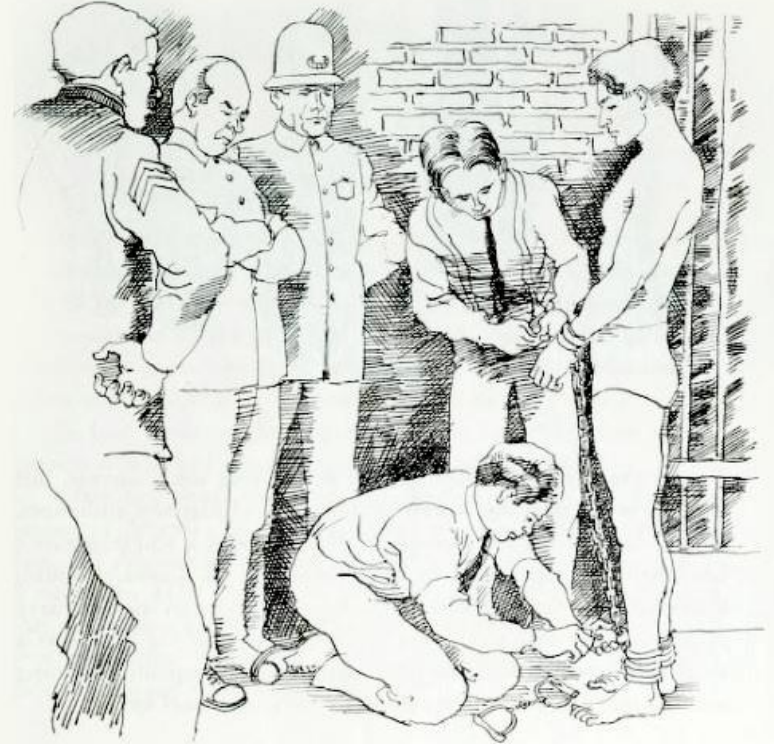
1900 की वसंत आते-आते इस प्रदर्शन को सफलता मिलने लगी थी. लेकिन हैरी संतुष्ट न था. नए और अधिक दर्शकों के प्रलोभन में वह और उसकी पत्नी यूरोप की ओर चल दिए. यह प्रदर्शन वहाँ के लोगों को बहुत पसंद आया. रशिया में उसने ज़ार की पुलिस को चुनौती दी कि वह उसे उस वैन में बंद कर दें जिसमें वह कैदियों को ले जाते थे. वैन स्टील की बनी थी. पिछली तरफ एक दरवाज़ा था जिस पर बाहर से ताला लगाया जाता था. उस दरवाज़े के ऊपर एक खिड़की थी. उस पर स्टील की चार सलाखें लगी थीं.

रशिया की पुलिस को पूरा विश्वास था कि हुडिनि उस वैन से निकल कर बाहर न आ सकता था. उन्होंने उसके कपड़े उतार कर उसके शरीर की जाँच की कि उसने कोई चाभी या औज़ार तो छिपा न रखा था. फिर उन्होंने उसके हाथों में हथकड़ी लगा दी और पाँव भी बाँध दिए. एक टखने को दूसरे टखने से एक ज़ंजीर के साथ बाँध दिया. फिर उसे वैन में बंद कर के बाहर से ताला लगा दिया.

सिर्फ 28 मिनटों में हैरी वैन से बाहर गया. वैन का दरवाज़ा बंद ही था. हथकड़ियाँ वैन के अंदर थीं.

यूरोप में पांच वर्ष बिताने के बाद हैरी और बैस अमरीका लौट आए. अब तक हुडिनि एक स्टार बन चुका था. वाशिंगटन की एक जेल से नाटकीय ढंग से छूट कर उसने सनसनी फैला दी. जिस कोठरी में उसे बंद किया गया था उसमें कुछ वर्ष पहले चार्लस गिटाउ को कैद रखा गया था, उस आदमी ने राष्ट्रपति जेम्स गारफील्ड की हत्या की थी. वास्तव में पुलिस का मानना था कि उस कोठरी से भाग निकलना असंभव था.

कोठरी ईंटों की बनी थी. उसका दरवाज़ा मज़बूती से बंद हो जाता था. दरवाज़े को स्टील की एक सलाख से बंद किया जाता था जिसके एक सिरे पर एक मज़बूत ताला लगाया जाता था. ताला कोठरी में बंद कैदी की पहुँच से दूर था. पुलिस ने हुडिनि को एक कोठरी में और उसके कपड़ों को दूसरी कोठरी में बंद कर दिया.

दो मिनटों में ही हुडिनि कोठरी से बाहर आ गया. वह हॉल में दौड़ता गया. उसने अन्य कोठरियों के दरवाज़े खोल दिए और उन में बंद कैदियों को उनकी कोठरियों से निकाल कर दूसरी कोठरियों में बंद कर दिया. एक कैदी चिल्लाया, “क्या तुम मुझे जेल से छोड़ रहे हो?” कैदियों को नई कोठरियों में बंद कर हुडिनि ने अपने कपड़े पहने और आश्चर्यचकित जेल-वार्डन के सामने उपस्थित हुआ. उसे कोठरी से बाहर आने में मात्र 27 मिनट लगे थे. अपने कैदियों को भिन्न कोठरियों में देखकर वार्डन और भी हैरान हो गया.

लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हुडिनि नए-नए करतबों के बारे में सोचता रहता था. डेट्राएट में उसने एक पुल से कूदने का निर्णय लिया. अपने करतब को और भी आश्चर्यजनक बनाने के लिए उसने सर्दियों में कूदने की योजना बनाई. घर पर वह पानी और बर्फ से भरे टब में कूदने का बार-बार अभ्यास करता रहा. वह जानता था कि ठंडे, जमे हुए पानी के आघात को वह सह सकता था.

जिस दिन उसने करतब दिखाना था उस दिन उसने एक लिफाफे के ऊपर अपनी वसीयत लिखी. उसने बस इतना लिखा, “मैं अपना सब कुछ बैस को देता हूँ.” फिर हुडिनि जमी हुई डेट्राएट नदी के 25 फुट ऊपर बैले आइलैंड पुल पर खड़ा हो गया और फोटोग्राफर उसके चित्र लेने लगे. वह कमर तक नंगा था. उसकी कलाइयों पर दो हथकड़ियाँ लगी थीं. सुरक्षा के लिए 130फुट लंबी रस्सी उसकी कमर से बंधी हुई थी.

1908 के आरंभ में हुडिनि ने एक नया करतब अपने प्रदर्शन में जोड़ लिया था. इस करतब का नाम था वाटर-कैन. करतब में प्रयोग लाया जाने वाला कैन लोहे का एक बड़ा डिब्बा था. एक बोतल के समान इसकी सतहें झुकी हुई थीं. दर्शकों में से कुछ लोगों को कैन की जाँच करने के लिए बुलाया गया ताकि लोग देख लें कि उसमें कोई चाल न थी. करतब शुरु करने से पहले हुडिनि के एक सहायक ने कैन को पानी से भर दिया. हुडिनि के हाथों पर हथकड़ी लगा दी गई. सिर्फ एक नहाने का सूट पहने हुडिनि केन के अंदर चला गया. उसके अंदर जाते ही उसके सहायक ने कैन का ढक्कन बंद कर दिया. उस पर छह ताले लगा दिए. फिर कैन के चारों ओर परदे कर दिए.

परदे पर एक रोशनी चमकने लगी और ऑरकेस्ट्रा पर एक धुन बजने लगी. तीस सैकंड बीत गए. फिर एक मिनट बीत गया. दर्शक साँस रोक कर बैठे थे. हुडिनि पानी के अंदर ही था. डेढ़ मिनट बीत जाने पर उसका एक सहायक एक कुल्हाड़ी लेकर केन के पास खड़ा हो गया. आवश्यकता पड़ने पर वह केन को काटने के लिए तैयार था. दो मिनट बीत गए. दर्शक अपनी कुर्सियों पर बैठ न पा रहे थे. उन्हें डर था कि कुछ अनहोना घटित हो गया था. तीन मिनट के बाद सहायक ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई जैसे कि वह कैन तोड़ने वाला था. और तभी हुडिनि कैन से बाहर आ गया. उसके हृष्ट पुष्ट शरीर से पानी नीचे बह रहा था. वाटर-कैन पर अभी भी ताला लगा था.

अचानक हुडिनि कूदा. हवा को चीरता हुआ उसका शरीर नीचे आया और नदी के पानी से टकराया. पुल और नदी किनारे खड़े लोग भय और आश्चर्य से उसे देख रहे थे. आखिरकार हुडिनि हथकड़ियों के बिना पानी से बाहर आया और प्रतीक्षा में खड़ी नाव की ओर तैरने लगा. उसे देखकर लोग तालियाँ और सीटियाँ बजाने लगे. हुडिनि जब अपने होटल वापस लौटा तो उसकी पत्नी बहुत क्रोध में थी. बैस, जो अब करतबों में भाग न लेती थी और उसकी सलाहकार बन गई थी, इस करतब के बारे में कुछ न जानती थी. उसे लगा कि हुडिनि ने अपनी जान को जोखिम में डाल जिया था.
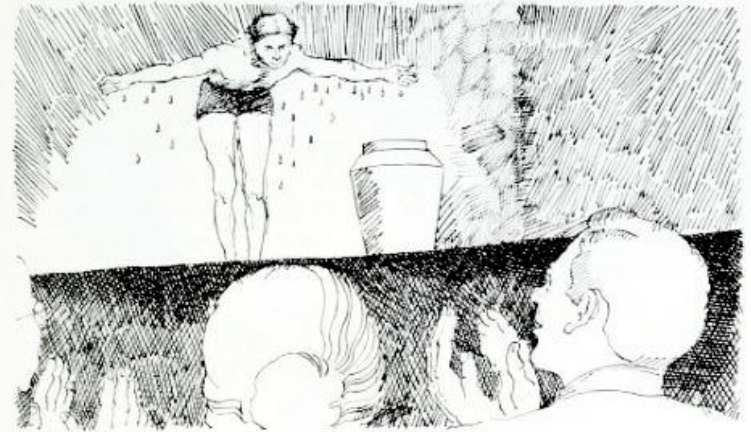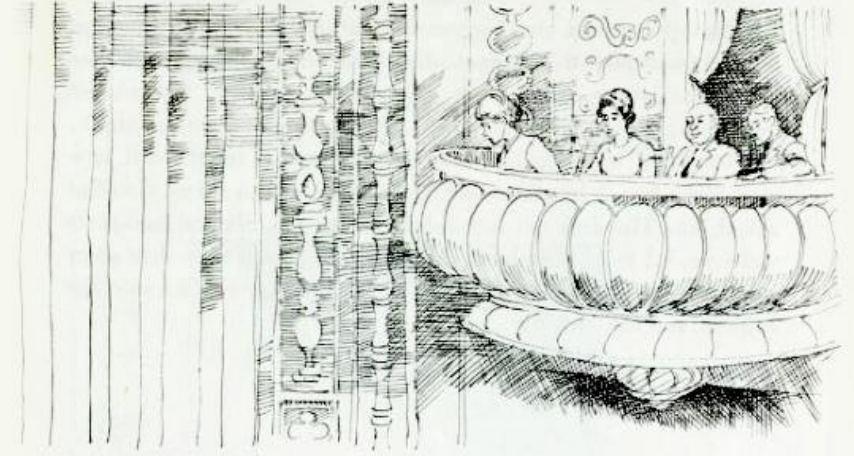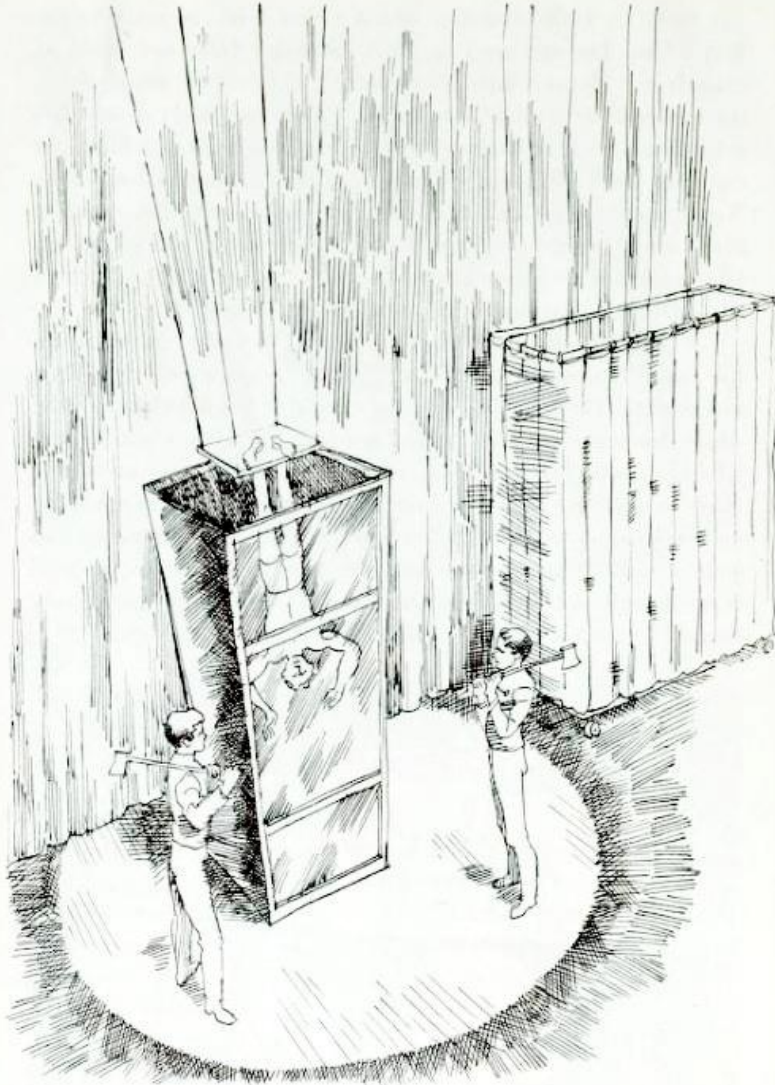
अपने प्रतिस्पर्धियों से आगे रहने के इरादे से हुडिनि हमेशा अपने करतबों में कोई न कोई बदलाव लाता रहता था. वाटर-कैन करतब दिखाने के कुछ वर्ष बाद हुडिनि ने उससे भी साहसिक करतब जिसका नाम चाइनीज़ वाटर टॉर्चर सैल था दिखाना शुरु किया.

इस करतब में वह एक लकड़ी के बने टैंक का उपयोग करता था जिसके अंदर धातु की परत लगी थी. टैंक के एक तरफ शीशा था. हुडिनि के सहायक ने टैंक को पानी से भर दिया और उसके अंदर एक पिंजरा रख दिया. हुडिनि के पाँव लोहे के फ्रेम में बाँध दे गए. हुडिनि को सिर के बल टैंक के अंदर डाल दिया गया. दर्शक उसे शीशे के अंदर देख सकते थे. फिर टैंक को ऊपर से बंद कर दिया गया. टैंक को परदों से बनी एक अलमारी से ढक दिया गया. ऑरकेस्ट्रा पर डाइवर नाम का संगीत बज रहा था. दो सहायक कुल्हाड़ियाँ लिए तैयार खड़े थे. अतिरिक्त सावधानी बरतता हुए टैंक में एक वाल्व भी लगाया गया था. अगर हुडिनि किसी मुसीबत में फंस जाता तो टैंक खाली करने के लिए वह यह वाल्व खोल सकता था.

टैंक के अंदर जाने के दो मिनट बाद हुडिनि मुस्कराता हुआ परदे के पीछे से बाहर आ गया. दर्शक खुशी से चिल्ला पड़े.

जनवरी 1918 में, हुडिनि ने अपना सबसे आश्चर्यजनक करतब न्यू यॉर्क के हिप्पोड्रोम थेटर में दिखाया. उसने एक विशाल हथिनी, जैन्नी, को गायब कर दिया. उसका महावत जैन्नी को स्टेज पर लाया. उसके गले पर एक हल्के नीले रंग का रिबन बंधा था. उसकी पिछली बाईं टांग पर एक नकली घड़ी बंधी थी. हुडिनि ने दर्शकों से कहा, "जैन्नी अब मुझे एक चुंबन देगी." जैन्नी ने अपनी सूँड़ उठाई. लगा कि वह वही करने वाली थी जो हुडिनि ने कहा था. हुडिनि ने उसे चीनी का टुकड़ा खिलाया. सौलह सहायक एक विशाल अलमारी स्टेज पर धकेल कर लाए. उन्होंने उसे घुमाया ताकि दर्शक देख लें कि वह बिलकुल खाली थी. फिर जैन्नी का महावत उसे अलमारी के अंदर ले गया और सहायकों ने उसे परदों से ढक दिया.
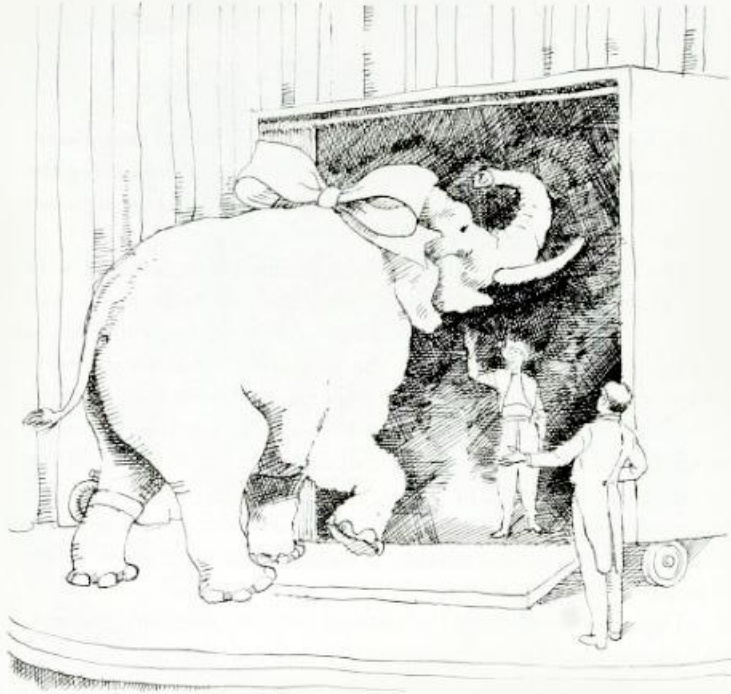
जब परदे दुबारा खोले गए तो अलमारी खाली थी. जैन्नी गायब हो गई थी. कई जादूगरों ने कहा कि वह इस करतब का राज़ जानते थे लेकिन कोई भी ऐसा करतब नहीं दिखा पाया.
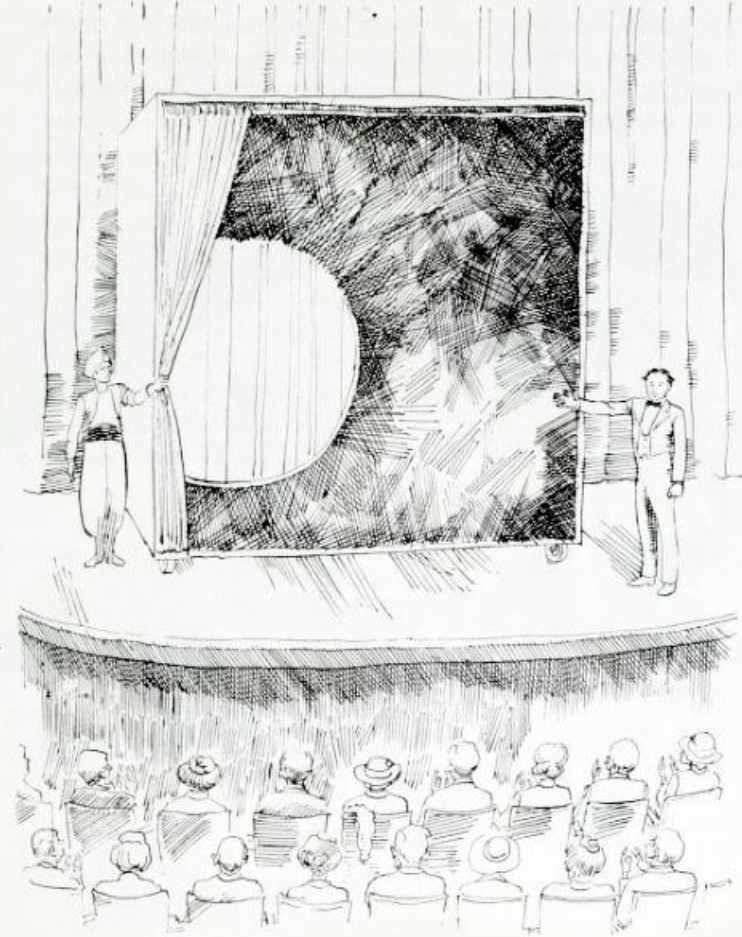
कुछ समय तक फिल्मों में काम करने के बाद हुडिनि ने प्रेतात्मवादियों की कलई खोलने का अभियान शुरु किया. प्रेतात्मवादी दावा करते थे कि वह मृत-लोगों से संदेश ला सकते थे और उन्हें संदेश भिजवा सकता थे. जो लोग अपने मृत संबंधी या मित्रों से बात करना चाहते थे उनसे यह लोग पैसे लिया करते थे.

हुडिनि को लगा कि प्रेतात्मवादी कपटी लोग थे. वह जानता था कि प्रेतात्मवादी किस तरह बहका कर लोगों में यह विश्वास पैदा कर देते थे कि उन्होंने मृत लोगों के साथ बात की थी. उसने भी मृत लोगों से बात करने के करतब दिखाए. जब भी संभव होता वह लोगों को समझाता कि उनके साथ छल किया जा रहा था.

क्लीवलैंड, ओहाइयो में हुडिनि एक प्रेतात्मवादी जॉर्ज रैन्नर की एक मीटिंग में गया. हुडिनि साबित करना चाहता था कि रैन्नर धोखेबाज़ था और इसलिए अपने साथ वह काउंटी प्रास्क्यूटर और एक रिपोर्टर को गवाह के रूप में ले गया था. हुडिनि ने पुराने कपड़े और आँखों पर चश्मा पहन कर अपना भेस बदल रखा था ताकि कोई उसे पहचान न पाए. हुडिनि और अन्य लोग जो मीटिंग के लिए आए थे उन्होंने प्रवेश के लिए पैसे दिए थे. सब एक बड़े मेज़ के चारों ओर बैठे थे. रैन्नर ने कहा कि हर आदमी अपने निकट बैठे व्यक्ति के घुटनों पर अपने हाथ रख दे. फिर उस प्रेतात्मवादी ने रोशनी बंद कर दी और आत्माओं को बुलाने लगा. उसकी पुकार के उत्तर में अनोखी खटखट की आवाज़ें आने लगीं. फिर अंधेरे में किसी की बात करने की आवाज़ सुनाई दी. गिटार बजने लगा. भोंपू अपने आप हवा में उड़ने लगे और फिर मेज़ पर आ गिरे.

अचानक हुडिनि ने अपनी फ्लैशलाइट जला दी. “मिस्टर रैन्नर,” उसने कहा, “तुम धोखेबोज़ हो.” रैन्नर के हाथ कोयले की कालिख से काले हो गए थे. मीटिंग के दौरान हुडिनि ने भोंपुओं पर कालिख लगा दी थी. जब रैन्नर ने भोंपुओं को हवा में घुमाया तो उसके हाथों में कालिख लग गई. वह तो लोगों को भ्रमित कर रहा था कि भोंपुओं को आत्माओं ने हवा में घुमाया था. हाथों पर कालिख लगने से उसकी पोल खुल गई थी और से जेल हो गई.

22 अक्तूबर 1926 के दिन मॉन्ट्रियाल के प्रिंसेस थेटर में हुडिनि अपना करतब दिखा रहा था. दुपहर बाद हुडिनि ड्रैसइंग रूम में आराम कर रहा था. मैकगिल विश्वविद्धालय के कई छात्र उससे मिलने आए. उनमें एक छात्र, जे गार्डन वाइटहैड, जो एक छह फुट लंबा, तगड़ा युवक था. उसने हुडिनि से पूछा कि क्या यह सच था कि पेट पर ज़ोर से घूँसे मारे जाने पर भी वह घायल न होता था. हुडिनि एक काउच पर लेटा अपनी डाक देख रहा था. उसने सिर हिला कर सहमति व्यक्त की. वाइटहैड ने कहा कि क्या वह उसे कुछ घूँसे मार सकता था. हुडिनि ने हामी भर दी. इसके पहले कि हुडिनि अपने पेट की मज़बूत माँसपेशियों को अकड़ा कर घूँसों के लिए तैयार कर पाता, वाइटहैड ने घूँसा मार दिया. हुडिनि के रोकने से पहले उसने तीन और घूँसे उसके पेट में मार दिए.
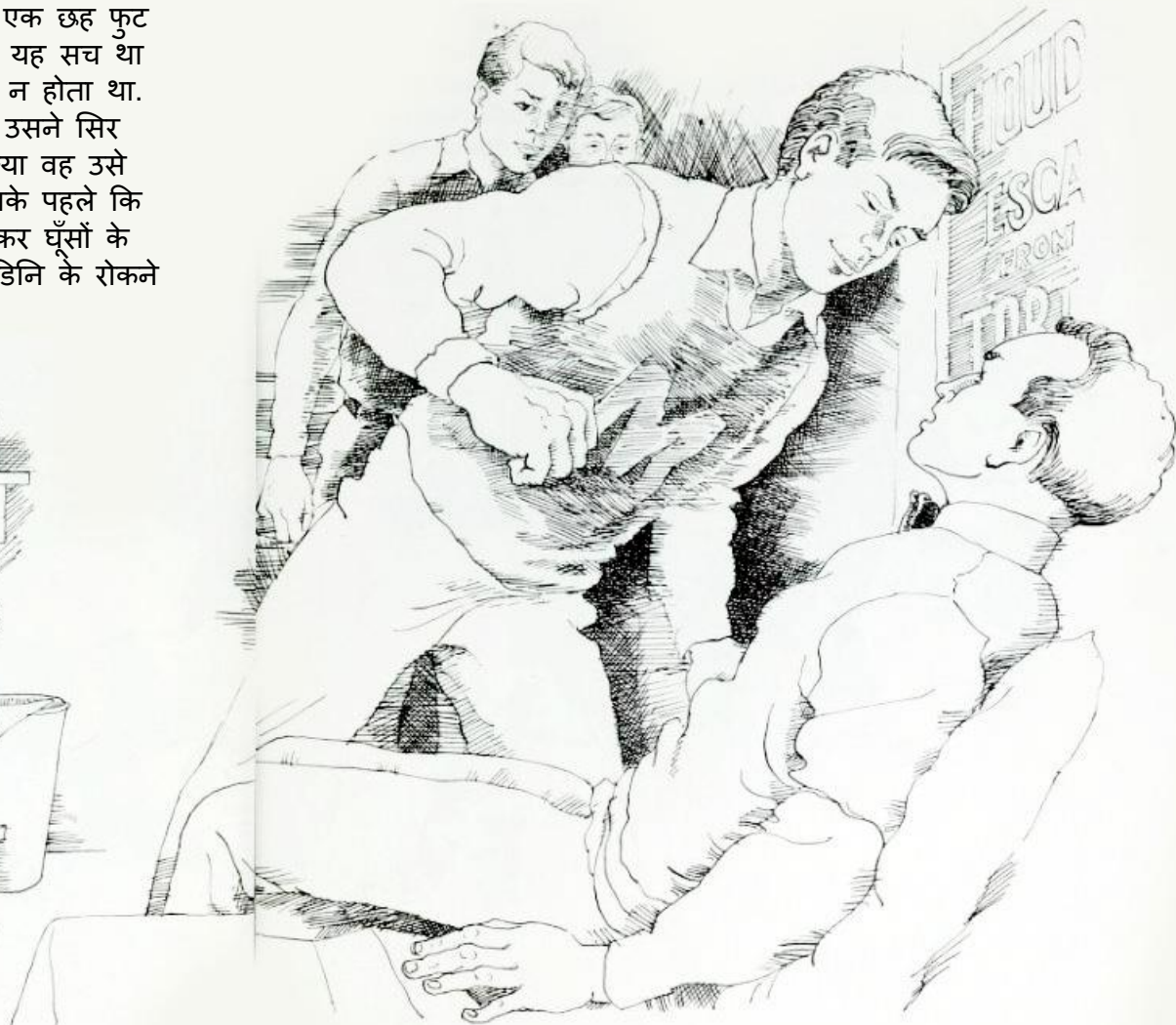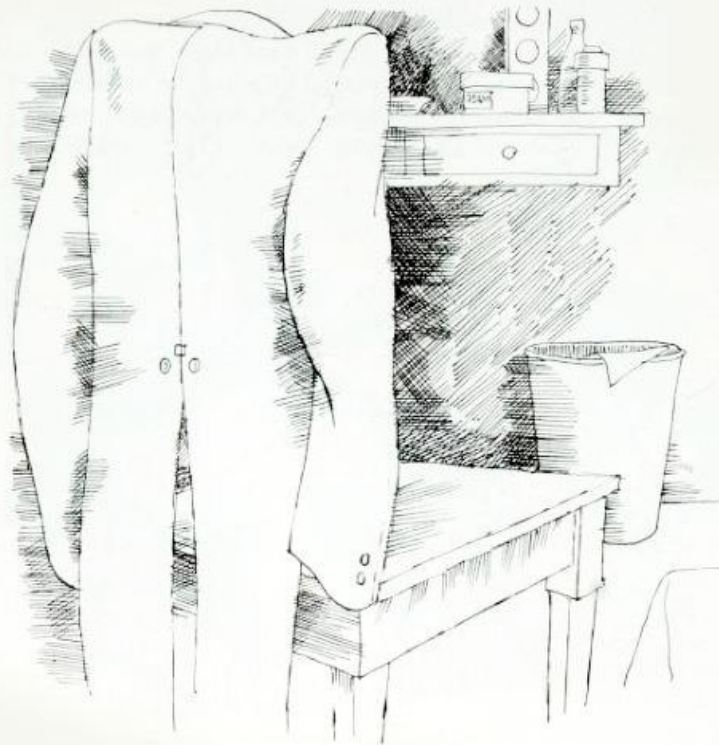
उस दुपहर हुडिनि को पेट में बहुत दर्द हुआ. जब तक शाम का प्रदर्शन खत्म हुआ वह बहुत तकलीफ में था. इस घटना के अगले दिन मॉट्रियाल में प्रदर्शन बंद हो गया. एक दिन बाद ही उसे डेट्राएट में प्रदर्शन करना था. दर्द के बावजूद हुडिनि प्रथम शो में भाग लेना चाहता था क्योंकि वह दर्शकों को निराश न करना चाहता था. शो खत्म होने के बाद डाक्टरों और परेशान बैस ने उसे अस्पताल जाने के लिए मना लिया. अस्पताल में उसके दो ऑपरेशन हुए पर एक सप्ताह बाद उसकी मृत्यू हो गई. उसकी मौत का कारण था एपैंडिक्स का फटना.

हुडिनि के कई करतबों का राज़ उसके साथ ही दफन हो गया. लेकिन कुछ की जानकारी उपलब्ध है. वह अपने पाँव से गाँठे खोल सकता था. चैंपियन तैराकों से भी अधिक समय तक वह अपने साँस रोक सकता था.

छोटे आलू के बराबर की चीज़ें वह निगल सकता था और फिर उन चीज़ों को इच्छानुसार मुँह से बाहर निकाल सकता था. अपनी माँसपेशियों पर उसका ऐसा नियंत्रण था कि वह लोगों के सामने किसी भी हथकड़ी से बाहर आ सकता था.
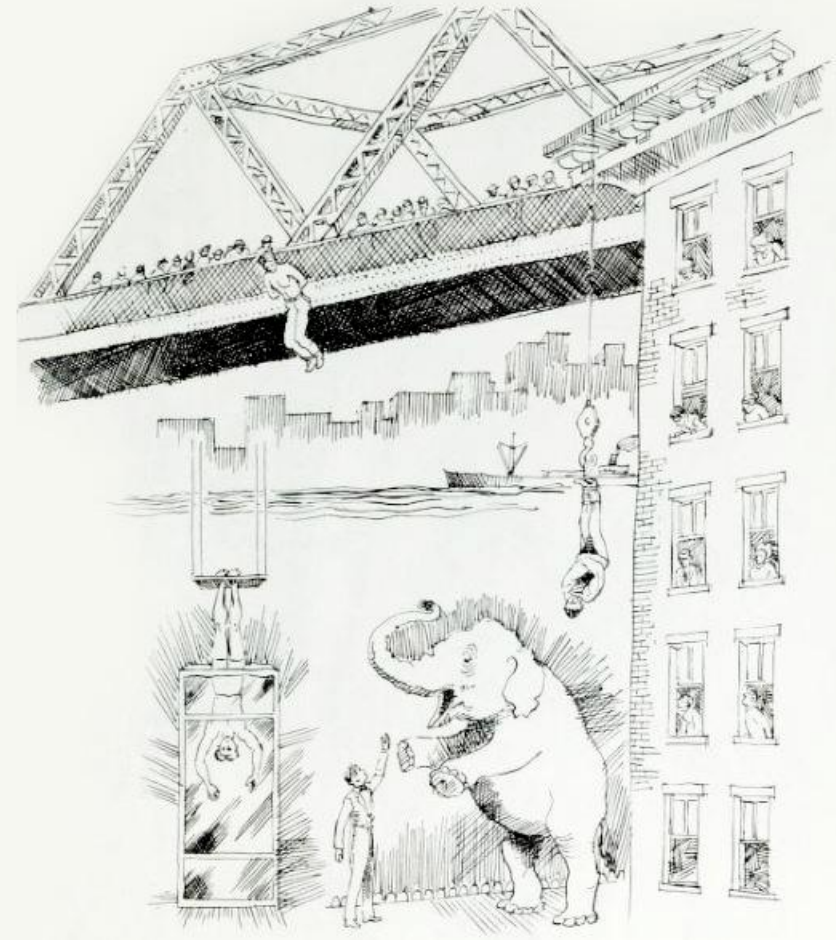
लेकिन यह कोशल और क्षमता उसने सरलता से अर्जित नहीं की थी. इसके लिए उसने वर्षों कठोर मेहनत की थी. हुडिनि दिन में पाँच घंटे से अधिक कभी न सोया था. कभी-कभी वह बिना कुछ खाए बारह घंटे लगातार अभ्यास करता था. फिर दूध में कच्चे अंडे मिला कर झटपट पी लेता था और अभ्यास करने लगता था. हर करतब के हर पहलू की वह बार-बार जाँच करता था. भाग्य या संयोग पर वह बिलकुल निर्भर न करता था.

प्रदर्शनों की भव्यता, साहस और कठोर परिश्रम से हुडिनि अपनी कला में सबसे श्रेष्ठ बन गया था. उसके जैसा बाज़ीगर पहले कभी न हुआ था. और शायद उस जैसा दुबारा होगा भी नहीं.

हुडिनि, अपने एक करतब के लिए सिर से पाँव तक ज़ंजीरों में बंधा हुआ

हुडिनि और उसकी पत्नी बैस, नवंबर 1926

18 नवंबर 1917, ब्रॉडवे में ज़जीरों में बंधा हुडिनि ज़मीन से चालीस फुट ऊपर उल्टा लटका हुआ.